1. दरिद्रता का सम्पूर्ण रूप से समापन करें -

किसी भी त्यौहार को मनाने का सही अर्थ यही है कि सबसे पहले तो घर से दरिद्रता दूर की जाए एवं सुख-सौभाग्य के क्षण आएं। इसके बिना न तो पर्व का कोई अर्थ है और न ही आगे की किसी साधना का। इस वर्ष पर्व को सही रूप में उल्लासमय बनाने के लिए ही यह विशिष्ट प्रयोग सबसे पहले प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रयोग में **लघु मोती शंख** लेकर इसी पर संक्षिप्त साधना करनी है।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को 8 से 10 बजे के मध्य लघु मोती शंख को केशर से पूरी तरह रंग कर पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की केवल एक माला मंत्र जप करना है और मंत्र जप पूर्ण होने पर चावलों को सुरक्षित रख दें और होलिका दहन पर इन्हें होलिका की अग्नि में विसर्जित कर दें। यह प्रयोग अत्यंत ही तीक्ष्ण तथा सम्पूर्ण रूप से दरिद्रता का विनाश करने वाला है।

मंत्र

।।ॐ श्रीं ह्रीं क्रों ऐं।।

मंत्र जप के उपरांत माला और शंख को जल में विसर्जित कर देने का विधान है।

प्राण प्रतिष्ठा मोती शंख - 300/-, प्राण प्रतिष्ठा मूंगा माला - 300/-

2. रोग का निवारण आवश्यक है –

दरिद्रता नाश के साथ ही आरोग्यता पूर्ण जीवन प्राप्त करना साधक की दूसरी प्रमुख आवश्यकता है कि न तो साधक के शरीर में कोई बीमारी या क्षीणता रहे और न ही उसकी पत्नी और बच्चों के साथ किसी प्रकार की कोई शारीरिक बाधा हो। होली की रात्रि को एक **तांत्रोक्त नारियल** लेकर (परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए अलग-अलग तांत्रोक्त नारियल आवश्यक है) उसे सिन्दूर से पूरी तरह रंग लें और स्वयं के भी सिन्दूर से तिलक कर अपनी बीमारी बोलें तथा परिवार के लिए भी प्रयोग करने पर उनकी भी बाधाएं बोलकर, परिवार का मुखिया **मूंगे की माला** से एक माला निम्न मंत्र का जप करे, **इसमें अलग-अलग सदस्यों के लिए मंत्र जप आवश्यक नहीं है। एक माला मंत्र जप से ही प्रत्येक को पूर्ण प्रभाव प्राप्त हो जाता है।**

मंत्र

ॐ चित् पिंगल हन हन दह दह पच पच
सर्वज्ञा ज्ञापय स्वाहा ।।

मंत्र जप के उपरांत माला और सभी तांत्रोक्त नारियलों को होलिका-दहन की रात्रि में ही जाकर अग्नि में समर्पित कर दें और लौट कर हाथ पांव धो लें। यह प्रत्येक जटिल एवं पीड़ाकारक व्याधियों का भी अचूक प्रयोग है।

प्राण प्रतिष्ठा तांत्रोक्त नारियल - 150/-, मूंगा माला - 300/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

3. तांत्रिक प्रयोगों का पलट कर वार हो –

समाज ऊपरी तौर पर भले ही सभ्य और आधुनिक कहा जाने लगा है लेकिन अंदर ही अंदर जिस प्रकार से तीव्र घात-प्रत्याघात चलते रहते हैं, उनके बाद तो यह आवश्यक है कि होली की रात्रि में ऐसा प्रयोग कर जहां एक ओर सुरक्षा-चक्र बना लिया जाए वहीं ऐसा प्रयोग करने से यदि कोई तांत्रिक प्रयोग, व्यापार बंध, बुद्धि-स्तम्भन, गर्भ बंधन जैसे काले प्रयोग करे या करवाए गए हों तो वे भी पलट कर विपक्षी के पास लौट जाते हैं।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को अथवा किसी भी रविवार को **दस तांत्रोक्त फलों** को लेकर भूमि पर रखें तथा प्रत्येक फल के आगे एक तेल का दीपक जला कर **काली हकीक माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ स्रां ॐ स्रीं ॐ स्रूं ॐ स्रः ।

यह मंत्र जप एक ही रात्रि में पूर्ण हो जाना चाहिए। साधक दस बजे के बाद इस साधना में कभी भी बैठ सकता है और दूसरे दिन सुबह सभी तांत्रोक्त फलों को किसी सुनसान स्थान पर फेंक दें। इससे व्यापार बंध, स्तम्भन आदि प्रयोगों से मुक्ति मिल जाती है।

प्राण. तांत्रोक्त फल - 300/-, काली हकीक माला - 300/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

4. गृह-दोष, पितृ-दोष जीवन में अभिशाप है –

घर में अभिशप्त आत्माओं की उपस्थिति जीवन में ऐसा अभिशाप है जिससे पूरा का पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और स्थिति यहां तक बिगड़ते देखी गई है कि पीड़ित व्यक्ति घबरा कर आत्महत्या करने की बात भी सोचने लगता है। ऐसे समस्त दोषों और पितृ दोषों की समाप्ति यदि पूर्ण रूप से संभव हो सकती है तो केवल विशेष तंत्र सिद्ध मुहूर्तों पर ही संभव है, अन्यथा इसका निवारण अत्यंत कठिन ही होता है। होलाष्टक की किसी भी रात्रि में यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। एक **भैरव गुटिका** को स्थापित कर उसका धूप, दीप, सिन्दूर व गुड़ के नैवेद्य से पूजन कर तथा उसी के ठीक बगल में एक **मधुरूपेण रुद्राक्ष** स्थापित कर उसके चारों ओर दस हकीक पत्थर स्थापित करें। मधुरूपेण रुद्राक्ष का पूजन केवल पुष्पों से कर सभी दस हकीक पत्थरों पर सिन्दूर का तिलक करें एवं **रुद्राक्ष माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें –

मंत्र

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्व
कर्माणि साधय स्वाहा वौषट् ।।

मंत्र-जप करते समय तेल का दीपक लगा लें। यदि मंत्र-जप के मध्य आहट व फुसफुसाहट आरम्भ हो तो भयभीत न हों तथा मंत्र-जप करते रहें। मंत्र-जप के उपरांत भैरव गुटिका, मधुरूपेण रुद्राक्ष, रुद्राक्ष माला तथा शेष सामग्री को काले वस्त्र में बांध कर निर्जन स्थान पर विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा भैरव गुटिका - 150/-
प्राण प्रतिष्ठा मधुरुपेण रुद्राक्ष - 150/-
प्राण प्रतिष्ठा रुद्राक्ष माला - 300/-

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

5. शत्रु शांत होता ही है, इस प्रयोग से -

जीवन में सभी सुख हों किन्तु शत्रु-बाधा बनी रहे तो उससे अधिक दुःखदायी कुछ भी नहीं होता। हर समय आशंका बनी रहती है कि पता नहीं अगले पल क्या हो? प्रकट शत्रु से तो एक बार फिर भी निपटा जा सकता है लेकिन जहां कोई छिप कर वार करने की चेष्टा में हो तो वहां समस्या और भी अधिक गंभीर हो जाती है। वहां लड़ें भी तो किससे? ऐसी ही समस्याओं और विशेष कर पीठ-पीछे घात लगाकर, कुचक्र रचकर वार करने वालों के समापन के लिए होलाष्टक ही श्रेष्ठ तांत्रोक्त मुहूर्त है।

होलाष्टक में किसी भी रात्रि को विशेष रूप से मंत्र सिद्ध किया गया **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** इस समस्या का सही उपाय है। रात्रि में दस बजे के बाद एकांत में बैठ लाल वस्त्र पहन कर अपने सामने **शत्रु बाधा निवारण यंत्र** स्थापित कर लें। यह यंत्र ताम्र पात्र पर अंकित अथवा ताबीज रूप में भी हो सकता है। इस पर लाल डोरा बांध, **हकीक अथवा मूंगा माला** से निम्न मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रौं ग्लौं भगवति दण्डधारिणि अमुकं
अमुकं शीघ्रं रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं ह्रीं
राज्ये ॐ हुं हुं हुं

मंत्र-जप के उपरांत वहीं बैठे-बैठे पहले से लाकर रखी नीम की 108 पत्तियों से एक छोटे हवन-कुंड में अग्नि प्रज्वलित कर अपने प्रमुख शत्रु (या कई शत्रुओं और गुप्त शत्रुओं की दशा में **'समस्त ज्ञात-अज्ञात'** शत्रुओं) की बाधा-शांति का संकल्प कर उपरोक्त मंत्र से 108 आहुति दें। आहुति के पश्चात् प्रातः हवन-कुण्ड की राख, माला व यंत्र सभी कुछ होलिका-दहन में ले जाकर उपरोक्त मंत्र का एक बार उच्चारण करते हुए समर्पित कर दें तथा एक प्रदक्षिणा कर आनंदपूर्वक घर वापस आ जाएं। ऐसा करने से तीव्र से तीव्र शत्रु शांत होता है और कई बार तो दूसरे ही दिन वह क्षमायाचना या सुलह-समझौते जैसे स्वर में बात करने लग जाता है। यदि कोई आशंका हो, तब तो यह प्रयोग सुरक्षा-चक्र की भांति कर ही लेना चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

6. अटूट लक्ष्मी का स्वागत कीजिए -

केवल दीपावली की रात्रि ही नहीं, होली की रात्रि भी समान रूप से चैतन्य और लक्ष्मी साधनाओं के लिए भी अनुकूल कही गई है। आपके मन में यदि कोई विशेष लक्ष्मी साधना करने की इच्छा हो तो उसके लिए दीपावली के पश्चात् यह एक श्रेष्ठ अवसर है अन्यथा होली के अवसर पर एक विशेष लक्ष्मी साधना भी वर्णित है उसे **'अटूट लक्ष्मी साधना'** की संज्ञा दी गई है।

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक को जीवन में कभी भी धन का अभाव नहीं देखना पड़ता। यदि दैवयोग से कोई स्रोत बंद भी हो जाए तो कोई न कोई दूसरा स्रोत अविलम्ब प्राप्त हो ही जाता है। साथ ही लक्ष्मी के समस्त स्वरूपों की प्राप्ति और जीवन में उनको चिरस्थायी बनाए रखने की भी यही साधना है। देश के कुछ उद्योगपति परिवारों की सम्पन्नता और ऐवर्श्य का रहस्य यही साधना है जिसे वे प्रतिवर्ष होली के अवसर पर करते ही हैं, भले ही कोई अन्य साधना न करें।

इस साधना में **लक्ष्मी प्राकाम्य** नामक एक समुद्री पदार्थ की आवश्यकता पड़ती है, जो देखने में शंख जैसा होता है। तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाओं में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक माना गया है। इसे होली की रात्रि में ठीक अर्ध-रात्रि के समय पीले चावलों की ढेरी पर स्थापित कर पूर्ण रूप से लक्ष्मी मान, उसी प्रकार से पूजन कर, **कमलगट्टे की माला** से निम्न दुर्लभ मंत्र की एक माला मंत्र जप करना होता है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं श्रीं क्लीं
ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।।

इस मंत्र जप के पश्चात् **लक्ष्मी प्राकाम्य** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा होलिका की पवित्र अग्नि में उपरोक्त मंत्र से कमलगट्टे की माला का एक-एक मनका तोड़ कर आहुति दे दें। अगले वर्ष जब यह साधना पुनः करें तो पहले का **लक्ष्मी प्राकाम्य** पवित्र नदी या सरोवर में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा लक्ष्मी प्राकाम्य - 210/-,
प्राण प्रतिष्ठा कमलगट्टे की माला - 300/-

✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣ ✣

7. सिद्धि प्रयोग -

यह एक ऐसा विलक्षण प्रयोग है जो होली की रात्रि में ही सिद्ध किया जा सकता है। **जहां-जहां होली की रात्रि का उल्लेख होता है वहां साधना की दृष्टि से अर्थ 'होलिका-दहन' की रात्रि से होता है, क्योंकि अगला दिन तो 'धुलंडी' के नाम से जाना जाता है।**

तांत्रिक इस विशेष रात्रि को जहां बहुत दिनों से सोचा गया कोई प्रयोग सम्पन्न करके सफलता प्राप्त करते हैं, वहीं एक प्रयोग ऐसा भी कर लेते हैं जिससे होली की इस चैतन्य रात्रि का प्रभाव आगे भी मिलता रहे। वे कुछ **सिद्धि फलों** को लेकर इसी रात्रि में इस प्रकार चैतन्य कर लेते हैं कि भविष्य में वे जिस भी साधना में साथ रखे जाएं, सफलता मिलती रहे। इसमें संख्या की कोई सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी **एक बार में कम से कम पांच सिद्धि फलों को चैतन्य करना आवश्यक है,** जो भविष्य में पांच साधनाओं में सफलतादायक बन सकते हैं।

साधक होली की रात्रि में ग्यारह बजे के आसपास सभी सिद्ध फलों को पीला वस्त्र बिछाकर चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **स्फटिक माला** से निम्न और सर्वथा दुर्लभ मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें। (अधिक सिद्धि फल होने पर उनकी संख्या के अनुरूप ही मालाओं की संख्या रहेगी।)

मंत्र

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः सहस्त्रार हुं फट्॥

उपरोक्त मंत्र जप के उपरांत सभी सिद्धि फलों को एक डिब्बी में सुरक्षित बंद कर लें और भविष्य में उनको अलग-अलग साधनाओं में प्रयुक्त कर सकते हैं। **इस अवसर पर जिस स्फटिक माला से मंत्र जप हो, वह पहले किसी साधना में प्रयुक्त न हुई हो क्योंकि अप्रयुक्त माला ही उपरोक्त मंत्र के द्वारा स्वतः ही सिद्धि माला के रूप में परिवर्तित हो जाती है। मंत्र जप के पश्चात् स्फटिक माला को अपने गले में धारण कर लें और सवा माह पश्चात् जल में विसर्जित कर दें।**

प्राण प्रतिष्ठा पांच सिद्धि फल - 400/-,
प्राण प्रतिष्ठा स्फटिक माला - 300/-

8. जीवन में मधुरता लाइए, वशीकरण प्रयोग से -

होलाष्टक सम्मोहन वशीकरण, यक्षिणी साधनाओं, अप्सरा साधनाओं का विशेष तांत्रोक्त काल है और कोई भी प्रयोग सम्पन्न क्यों न किया जाए, सफलता मिलती ही है। फिर भी यदि इस तांत्रोक्त काल को विशेष ध्यान में रखकर कोई साधना सम्पन्न की जाए तो सफलता की संभावनाएं कई गुना बढ़ जाती हैं।

होली एक प्रकार से पूर्व वर्ष की विदाई और नववर्ष के स्वागत का अवसर है और ऐसे में प्रेम-सम्बन्धी, विवाह सम्बन्धी या दाम्पत्य जीवन में मधुरता घोलने की, आगामी वर्ष को रसमय बनाने की यही साधना कही गई है। यह केवल प्रेमी-प्रेमिका के सम्बन्धों को लेकर नहीं बल्कि विवाहित स्त्री-पुरुषों को भी ध्यान में रखकर ढूंढ़ी गई साधना है, जिससे उनके जीवन में नीरसता और जड़ता समाप्त हो सके।

इस साधना को होलाष्टक के किसी भी दिन सम्पन्न किया जा सकता है। साधना हेतु साधक पहले से एक **चित्रित** प्राप्त कर ले जो सम्मोहन मंत्रों से सिद्ध हो तथा **मूंगे की माला** भी प्राप्त कर लें। इस साधना में जिसको सम्मोहित करना है उसके नाम का संकल्प कर निम्न मंत्र की 3 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ कामाय क्लीं क्लीं कामिन्यै क्लीं॥

यदि विवाहित दम्पति में पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर लें तो उनके जीवन में विशेष मधुरता आ जाती है। इसके लिए उन्हें अलग-अलग **दो चित्रित** प्राप्त करने होंगे, यद्यपि माला का संयुक्त रूप से प्रयोग कर सकते हैं।

दूसरे दिन **चित्रित एवं माला** को किसी आम या अशोक की जड़ में दबा दें। यह सम्मोहन-वशीकरण से भी अधिक मधुरता और प्रेम रस घोलने का सिद्ध सफल प्रयोग है।

प्राण प्रतिष्ठा चित्रित - 150/-,
प्राण प्रतिष्ठा मूंगा माला - 300/-